महत्वपूर्ण एवं खास

दृढ़ इच्छाशक्ति की मिसाल

विज्ञान को दुनिया के सेलेब्रटी, विलक्षण प्रतिभा के धनी होने के साथ असाधारण जिजीविषा वाले महान वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग का जाना पूरी दुनिया के विज्ञान जगत के लिए अपूरणीय क्षति है। उनका पूरा जीवन मौत को चुनौती देते हुए ही बीता। 22 साल की उम्र में ही उन्हें मोटर न्यूरोन नामक लाइलाज बीमारी हो गयी थी। जिसकी वजह से उनके शरीर ने धीरे-धीरे काम करना बंद कर दिया था। उस समय डॉक्टरों ने कहा था कि स्टीफन हॉकिंग दो साल से ज्यादा नहीं जी पाएंगे लेकिन उसके बाद वो 76 साल की उम्र तक अपनी अदम्य जिजीविषा के साथ न सिर्फ जीवित रहे बल्कि उन्होंने विज्ञान के जटिल और गूढ़ रहस्यों को दुनिया के सामने रखा। हॉकिंग ने ब्लैक होल और बिग बैंग सिद्धांत को समझने में अहम योगदान दिया है। कई बड़े पुरस्कारों के साथ ही उन्हें अमेरिका का सबसे उच्च नागरिक सम्मान दिया जा चुका है। ब्रह्मांड के रहस्यों पर उनकी किताब 'अ ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ टाइम' काफी चर्चित हुई थी। यूनिवर्सिटी ऑफ़ केम्ब्रिज में गणित और सैद्धांतिक भौतिकी के प्रोफ़ेसर रहे हॉकिंग की गिनती आइंस्टीन के बाद सबसे प्रभावशाली भौतिक शास्त्रियों में होती है। वर्ष 1974 में 'ब्लैक होल इतने काले नहीं' शीर्षक से प्रकाशित हॉकिंग के शोधपत्र ने सामान्य सापेक्षता सिद्धांत एवं क्वांटम भौतिकी के सिद्धांतों के आधार पर यह दर्शाया कि ब्लैक होल पूरे काले नहीं होते, बल्कि ये अल्प मात्रा में विकिरणों को उत्सर्जित करते हैं। हॉकिंग ने यह भी प्रदर्शित किया कि ब्लैक होल से उत्सर्जित होने वाली विकिरणें क्वांटम प्रभावों के कारण धीरे-धीरे बाहर निकलती हैं। इस प्रभाव को हॉकिंग विकिरण के नाम से जाना जाता है। हॉकिंग विकिरण प्रभाव के कारण ब्लैक होल अपने द्रव्यमान को धीरे-धीरे खोने लगते हैं तथा ऊर्जा का भी क्षय होता हैं। यह प्रक्रिया लम्बे अंतराल तक चलने के बाद अन्ततोगत्वा ब्लैक होल वाष्पन को प्राप्त होता है। दिलचस्प बात यह है कि विशालकाय ब्लैक होलों से कम मात्रा में विकिरणों का उत्सर्जन होता है, जबकि लघु ब्लैक होल बहुत तेजी से विकिरणों का उत्सर्जन करके वाष्प बन जाते हैं। ब्रह्मांड की उत्पत्ति शुरुआत से ही वैज्ञानिक समुदाय के लिए जिज्ञासा का विषय रही है। सभी को इतना तो पता है कि ब्रह्मांड की उत्पत्ति लगभग 13.8 अरब साल पहले बिग बैंग से हुई लेकिन किसी को यह नहीं पता कि ब्रह्मांड से पहले क्या था। स्टीफन हॉकिंग ने दावा किया था कि बिग बैंग से पहले सिर्फ एक अनंत ऊर्जा और तापमान वाला एक बिंदु था। उनके मुताबिक उस वक्त टाइम (समय) और स्पेस घुमावदार और कोण वाली स्थिति में थे। हॉकिंग के मुताबिक हम आज समय को जिस तरह से महसूस करते हैं, ब्रह्मांड के जन्म से पहले का समय ऐसा नहीं था। इसमें चार आयाम थे। हॉकिंग ने बताया था कि भूत, भविष्य और वर्तमान को तीन समानांतर रेखाएं समझें तो उस वक्त एक और रेखा भी मौजूद थी, जो ऊर्ध्वाधर थी। उसे आप काल्पनिक समझ सकते हैं लेकिन हॉकिंग ने काल्पनिक समय को हकीकत बताया। उनका कहना था कि काल्पनिक समय कोई कल्पना नहीं है, बल्कि यह हकीकत है। आप इसे देख नहीं सकते, लेकिन महसूस जरूर कर सकते हैं। स्टीफन हॉकिंग की लोकप्रियता का अंदाजा इसी बात से लगता है कि जब पिछले साल कैंब्रिज यूनिवर्सिटी की वेबसाइट पर उनकी पीएचडी थीसिस ऑनलाइन उपलब्ध होने के बाद वेबसाइट ही ठप पड़ गई थी। प्रॉपर्टीज ऑफ एक्सपांडिंग यूनिवर्सेस नाम के शीर्षक के ऑनलाइन उपलब्ध इस पेपर को एक ही दिन में 5,00,000 से ज्यादा लोगों ने डाउनलोड करने का प्रयास किया था। बाद में कुछ ही दिन के भीतर इसे 20 लाख बार देखा गया। जलवायु परिवर्तन को लेकर स्टीफन हॉकिंग ने मानव जाति के लिए एक गंभीर चेतावनी जारी की करते हुए कहा था कि जलवायु परिवर्तन, बढ़ती आबादी और उल्का पिंडों के टकराव से खुद को बचाए रखने के लिए मनुष्य को दूसरी धरती खोजनी होगी। अगर ऐसा नहीं कर पाये तो 100 साल बाद पृथ्वी पर मानव जाति का बचे रहना मुश्किल होगा। हॉकिंग ने चेताया था कि तकनीकी विकास के साथ मिलकर मानव की आक्रामकता ज्यादा खतरनाक हो गई है। यही प्रवृत्ति परमाणु या जैविक युद्ध के जरिए हम सबका विनाश कर सकती है। उनका कहना था कि एक वैश्विक सरकार ही हमें इससे बचा सकती है।

संपादकीय

मोदी जी, देश फिर बदल रहा है

पूर्वोत्तर के तीन राज्यों में सत्तारूढ़ होने के बाद भाजपा की तीन लोकसभा उपचुनावों में पराजय पर नकारात्मक टिप्पणी अंधभक्तों को पसंद तो नहीं आयेगी, लेकिन सच यही है कि देश का मन फिर बदल रहा है। भाजपा के लिए यह किसी अनहोनी से कम नहीं है कि देश के दो सबसे बड़े राज्यों : उत्तर प्रदेश और बिहार ने तीनों लोकसभा उपचुनावों में उसके विरुद्ध जनादेश दिया है। 2014 के लोकसभा चुनाव में, नीतीश कुमार के जनता दल-यूनाइटेड के अलगाव के चलते बिहार में तो भाजपा बड़ा करिश्मा नहीं कर पायी थी, लेकिन उत्तर प्रदेश में उसने तमाम राजनीतिक भविष्यवाणियों को ध्वस्त कर दिया था। यह उत्तर प्रदेश की चुनावी सफलता का ही परिणाम था कि तीन दशक बाद देश की राजनीति गठबंधन के दबावों से मुक्त हो पायी। इसलिए तीन दशक बाद अकेलेदम बहुमत पाकर केंद्रीय सत्ता में आने का कारनामा कर दिखाने वाली भाजपा के लिए ठहर कर खुले दिलोदिमाग से आत्मविश्लेषण करने का समय अब आ गया है। देश का हर राज्य और उसका जनादेश महत्वपूर्ण है। उसका सम्मान किया ही जाना चाहिए। पूर्वोत्तर के छोटे-से राज्यों में भी, अभी तक वहां अल्पज्ञात रही, भाजपा के सत्ता में आगमन को मीडिया की सुर्खियां बनना ही चाहिए था, लेकिन केंद्रीय सत्ता की राह आसान करने में पूर्वोत्तर के राज्यों की बड़ी भूमिका कभी नहीं रही। सवाल किसी राज्य या क्षेत्र विशेष को खास महत्व दिये जाने का नहीं है। सवाल लोकसभा में संख्या बल का है, जो सरकार गठन का मार्ग प्रशस्त करता है। यही कारण है कि आजाद भारत में अक्सर केंद्रीय सत्ता की कमान उत्तर भारत में जीत का परचम फहराने वाले राजनीतिक दल और नेता के ही हाथों में रही है। यही कारण था कि तीन कार्यकाल तक गुजरात के मुख्यमंत्री रहे नरेंद्र मोदी को देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश में भाजपा की विजय पताका फहराने के लिए खुद भी उत्तर प्रदेश के वाराणसी से लोकसभा का चुनाव लड़ना पड़ा। यह दांव कारगर भी रहा। दो दशक से भी ज्यादा समय से उत्तर प्रदेश की राजनीति के केंद्र में रही समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी को हाशिये पर धकेलते हुए भाजपा ने अप्रत्याशित जीत हासिल की। तत्कालीन सत्तारूढ़ रही सपा महज पांच सीटों पर सिमट गयी तो उससे पूर्व सत्तारूढ़ बसपा का खाता ही नहीं खुल पाया। साफ था कि लंबे समय से जाति-वर्ग-धर्म के खांचों में बंटी रही उत्तर प्रदेश की राजनीति का चेहरा बदलने में मोदी लहर कामयाब रही। बेशक उसमें सायास और अनायास हुए मतों के ध्रुवीकरण की भी भूमिका कम नहीं रही, पर उसकी कोशिशें तो हर चुनाव में की ही जाती रही हैं। इस बार वे कोशिशें इस कदर कामयाब रहीं तो उसमें जनमानस की बदलाव की चाहत ही निर्णायक रही। शायद इसी से प्रेरित होकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनकी सरकार व पार्टी ने नारा दिया : मेरा देश बदल रहा है। बेशक वर्ष 2009 के लोकसभा चुनाव में लालकृष्ण आडवाणी के नेतृत्व में दो सीटें और गंवा देने वाली भाजपा का वर्ष 2014 में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में अप्रत्याशित चुनावी प्रदर्शन देश में ऐतिहासिक राजनीतिक बदलाव ही था। उस प्रदर्शन पर किसी भी दल-नेता को गर्व हो सकता है, लेकिन लोकतंत्र में चुनाव परिणाम जन आकांक्षाओं से भी जुड़े होते हैं, और किसी भी सरकार की कसौटी ये जन आकांक्षाएं ही होती हैं। आखिर अबकी बारी, अटल बिहारी के नारे से बनी और शाइनिंग इंडिया का सपना दिखा रही अटल बिहारी वाजपेयी सरीखे कद्दावर नेता की सरकार वर्ष 2004 में इन्हीं जन आकांक्षाओं पर खरा न उतर पाने के चलते सत्ता से बेदखल हो गयी थी। फिर वर्ष 2009 में कांग्रेसनीत संप्रग को 2004 से भी ज्यादा बहुमत मिला तो उसकी वजह भी प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह से जुड़ी जन आकांक्षाएं ही थीं, जो 2014 आते-आते, अनेक कारणों से, पूरी तरह धराशायी हो गयीं। इसी निराशा के दौर में भाजपा ने गुजरात के चर्चित मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी पर चुनावी दांव लगाया और आडवाणी सरीखे शीर्ष नेता को किनारे कर उन्हें प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित कर दिया। मोदी की इस उम्मीदवारी के बाद ही तेजी से देश की राजनीति में ध्रुवीकरण शुरू हुआ। सही-गलत पर बहस तो अभी लंबे समय तक चलती रहेगी, लेकिन सच यही है कि संप्रग शासन की नाकामियों के अलावा भाजपा की जीत में सबसे निर्णायक योगदान अगर किसी का था तो वह मोदी की शख्सियत और अच्छे दिनों के सपने का था। यह सही है कि सत्ता बहुत कुछ बदल देती है, लेकिन मोदी जैसे नेताओं की शख्सियतें जल्दी नहीं बदलतीं। मोदी समय और सुविधा के अनुसार जुमले भले ही बदल रहे हों, लेकिन आम आदमी को अच्छे दिनों का इंतजार आज भी है। इन तथ्यों से मुंह नहीं चुराया जा सकता कि भूमि अधिग्रहण से लेकर जीएसटी तक जिन-जिन मुद्दों पर विपक्ष में रहते हुए भाजपा संप्रग सरकार का विरोध करती रही, उन्हें सत्ता में आने पर और भी आक्रामकता के साथ लागू किया गया–और वह भी देशहित और जनहित में बता कर। काला धन आया नहीं, भ्रष्टाचार रुका नहीं, आतंकवाद थमा नहीं, महंगाई पर लगाम लगी नहीं–फिर भी मेरा देश बदल रहा है, का नारा चलता रहा। ऐसे में निराश जन आकांक्षाओं का लावा कहीं तो फूटना ही था, जो देश भर में हो रहे उपचुनावों में साफ नजर आ रहा है। जो चुनाव परिणाम उत्तर प्रदेश और बिहार ने अब दिये हैं, राजस्थान-मध्य प्रदेश-पंजाब पहले ही दे चुके हैं। बेशक उत्तर प्रदेश के उपचुनाव परिणाम में निराश जन आकांक्षाओं के साथ ही चुनावी सामाजिक समीकरण की भी निर्णायक भूमिका रही है। पिछली बार बिहार में भाजपा के विरुद्ध जिस महागठबंधन की राह नीतीश कुमार ने दिखायी थी, उसे बाद में खुद उन्होंने ही पलीता लगा दिया। वैसे ही महागठबंधन की कोशिशें उत्तर प्रदेश में पिछले साल विधानसभा चुनाव में हुई थीं, जिन्हें मुलायम सिंह और अखिलेश की षड्यंत्रकारी राजनीति ने सिरे नहीं चढ़ने दिया। अर्श से फर्श पर आने के बाद अब जब भाजपा के विरुद्ध सपा उम्मीदवारों को बसपा ने समर्थन दिया तो पासा फिर पलट गया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ अपनी परंपरागत सीट गोरखपुर तक नहीं बचा सके। ऐसा ही फल फूलपुर ने दिया तो बिहार में अररिया भी पीछे नहीं रहा। यह सच है कि चुनावी राजनीति विशुद्ध अंक गणित नहीं है, लेकिन जाति-वर्ग-धर्म की अस्मिताओं -आकांक्षाओं की पहचान वाले भारतीय समाज में इस अंक गणित को नजरअंदाज भी नहीं किया जा सका। आखिर पिछले विधानसभा चुनाव में बिहार में भाजपा विरोधी महागठ बंधन ने ही मोदी लहर को रोक दिया था। इस बार वही काम सपा-बसपा के साथ ने कर दिखाया है। महागठबंधन तो बहुत दूर, सपा-बसपा ने सही मायने में तो गठबंधन भी नहीं किया, फिर भी विश्व की सबसे बड़ी पार्टी बतायी जा रही भाजपा परास्त हो गयी। ऐसे में यह समझ पाना मुश्किल तो नहीं कि उत्तर प्रदेश समेत पूरे देश में अगर सभी गैर भाजपा दल एकजुट होकर चुनाव लड़ें तो नतीजा क्या होगा। विरोधी मतों के विभाजन से निकलने वाली सत्ता की राह को इन मतों को एकजुट कर रोका भी जा सकता है। इसलिए मोदी जी, देश फिर बदल रहा है। अच्छी बात यह है कि मोदी और भाजपा के पास अभी लगभग सवा साल की सत्ता बची है। इसलिए अहं त्याग कर जुमलों के बजाय जन आकांक्षाओं की राजनीति के जरिये अपने गिरते ग्राफ को थामने की कोशिश कर सकते हैं।

मां की दृष्टि

संत विनोबा भावे की माता का नाम रखुनाई और पिता का नाम नरहरि भावे था। नरहरि भावे हमेशा जरूरतमंद लोगों की सहायता करते थे। वे अमूमन एक या दो विद्यार्थी हमेशा अपने साथ रखते थे। उनके खान-पान का वे विशेष ध्यान रखते थे। यदि खाना बच जाता तो स्वयं वे खाना खाते लेकिन उन बच्चों को ताजा खाना बनाकर खिलाते। विनोबा जी यह सब देखते रहते। एक दिन उन्होंने अपनी मां से पूछा–मां आप कहती हैं कि सभी में भगवान का वास रहता है तो आप मुझे ठंडी और उन्हें गर्म रोटियां खाने के लिए क्यों देती हैं। मां ने कहा–बेटा! मैं यह इसलिए करती हूं कि मेरा मोह अभी नहीं गया है। विनोबा में मुझे मेरा बेटा दिखता है और उन विद्यार्थियों में परमात्मा। जिस दिन तुम मुझे परमात्मा की तरह दिखाई देने लगोगे, उस दिन मैं तुम्हें भी गर्म रोटियां खिलाऊंगी।

संगीत का मजा, वाद्यों से परहेज

इन दिनों एक लेडीज संगीत में जाने का मौका मिला। एक महिला गज़ब की ढोलक बजा रही थी और दूसरी उस पर चम्मच से कमाल की जुगलबन्दी कर रही थी, जिसे सुनकर सबकी तालियां अपने आप ही बज रही थीं। मेरा मन सोच रहा था कि चूल्हे-चौके से जिन औरतों को फुर्सत नहीं मिलती, वे कब और कैसे ढोलक बजाना सीख लेती हैं। जबकि वे कभी किसी संगीत विद्यालय में नहीं गयीं। लेडीज संगीत खत्म होने के बाद एक बच्चे ने ढोलकी अपने हाथों में ले ली और ढप-ढप करने लगा। तभी उसकी मम्मी ने झपट कर ढोलकी खींची और धमकाते हुए बोली–खबरदार! जो ढोलकी को हाथ भी लगाया। मुझसे रहा नहीं गया और पूछ ही लिया–आप इसे ढोलकी बजाने से क्यों रोक रही हैं? महिला तेज़ तर्रार लहज़े में बोली–और कुछ बने ना बने पर मुझे अपने बेटे को ढोलकी मास्टर हरगिज़ नहीं बनाना। कुदरत में चारों ओर नाद है, संगीत है। हवा के चलने और पत्तों के हिलने से लेकर बूंदों के बरसने और पक्षियों के चहकने तक में एक संगीत है। चौबीस घंटे धड़कने वाला दिल भी एक लय में ही धड़कता है। संगीत से ही अवसरों-उत्सवों पर रौनक होती है। सरस्वती वीणा लिये हैं, कृष्ण के हाथ में बांसुरी है, शंकर के हाथ में डमरू, नारद भी एकतारा पकड़े हैं। फिर यदि हमारे बच्चे ढोलकी बजाने की ओर अग्रसर होते हैं तो हम उसे छोटा क्यों समझते हैं। मेरे एक मित्र ने अपने बेटे की इस बात पर ज़ोरदार पिटाई कर दी थी कि उसने तबला सीखने की जिद पकड़ रखी थी। वे एक ही बात दोहराये जा रहे थे कि मैं नहीं चाहता मेरा बेटा तबलची कहलाये। किसी भी शहर में जितने भी बैंड हैं या प्रोफेशनल वादक हैं, वे प्रायः संभ्रान्त परिवारों से नहीं हैं। समझ नहीं आता कि उच्च घरानों और तथाकथित उच्च जातियों ने संगीत वादन से दूरी क्यों बनाई? गायन में तो फिर भी सभी वर्गों के लोग शामिल हैं पर वादन से परहेज़ रखा। हो सकता है कि यह कारण हो कि वादन हमेशा नेपथ्य से होता है। मैंने कॉलेजों में भी देखा है कि म्यूजिक विषय लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या दिनोंदिन कम हो रही है। माना जाता है कि जब हम दुखी होते हैं तो गीत का आनंद लेते हैं और खुश होते हैं तो संगीत का।

राशिफल

मेष : आप पर लक्ष्मीजी की कृपादृष्टि रहेगी। विवाहोत्सुकों को जीवनसाथी मिलने का योग है। सामाजिक रूप से आपको यश-कीर्ति मिलेगी। व्यापार में लाभ होगा। स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। स्वजनों के साथ मतभेद होगा।

वृषः पारिवारिक जीवन में सुख-संतोष का अनुभव होगा। आपके कार्य की सराहना होगी और उच्च अधिकारी आप पर प्रसन्न रहेंगे। मध्याह्न के बाद नए कार्य का आप आयोजन कर पाएंगे। व्यापार में लाभ होगा।

मिथुनः आज का दिन मिश्रित फलदायी रहेगा। स्वास्थ्य में कुछ उतार-चढ़ाव आएगा। कार्यक्षेत्र में अधिकारियों की अप्रसन्नता से मन व्यग्र हो सकता है। धनका व्यय अधिक होगा। संतानों की चिंता सताएगी।

कर्कः क्रोध पर नियंत्रण रखिएगा। अनैतिक कार्यों और नकारात्मक विचारों से दूर रहें। धन की तंगी महसूस कर सकते हैं। आमोद-प्रमोद के पीछे धन का व्यय होगा। व्यावसायिक स्थल पर अधिकारियों से संभलकर रहिएगा।

सिंहः मित्रों और स्नेहीजनों के साथ आनंद के पल गुजारेंगे। मध्याह्न के बाद अधिक विचारों के कारण मानसिक रूप से आप थकान महसूस करेंगे। क्रोध की अधिकता रहेगी, वाणी पर संयम रखें।

कन्याः आजका दिन आपके लिए शुभ रहेगा। कार्य में सफलता मिलने से आज आप आनंदित रहेंगे। आपकी यश-कीर्ति में भी वृद्धि होगी। परिवार का वातावरण अनुकूल रहेगा। मध्याह्न के बाद आपका दिन मनोरंजन में बीतेगा। व्यापार में साझेदारों से लाभ होगा।

तुलाः लेखनकार्य और सृजनात्मक प्रवृत्तियों के लिए आज का दिन शुभ है। आज कुछ अधिक भावनाशील रहेंगे। व्यावसायिक स्थल पर वातावरण अनुकूल रहेगा और सहकर्मियों का साथ मिलेगा। परिवार में आनंद का वातावरण रहेगा।

वृश्चिकः भावुकता पर संयम रखने से मानसिक व्यग्रता का अनुभव कम होगा। वस्त्राभूषण एवं सौंदर्य प्रसाधनों के पीछे खर्च होगा। माता से लाभ होगा। नए काम की शुरुआत न करें। पेट में तकलीफ हो सकती है।

धनुः आज भाग्यवृद्धि का योग है, परंतु मध्याह्न के बाद कुछ अधिक ही संवेदनशीलता का अनुभव करेंगे। मानसिक रूप से व्यग्रता रहेगी। प्रसाधनों के पीछे स्त्रियों का धन का व्यय होगा।

मकरः आज धार्मिक विचारों के साथ-साथ धार्मिक कार्यों में खर्च भी होगा। मध्याह्न के बाद आपका मन चिंतामुक्त रहेगा। मित्रों-स्वजनों से हुई मुलाकात से मन आनंदित हो उठेगा। आज भाग्यवृद्धि के योग हैं।

कुंभः आज आप का मन प्रफुल्लित रहेगा ऐसा गणेशजी कहते हैं। गहन चिंतनशक्ति और आध्यात्मिकता दोनों में आप का मन डूबा रहेगा। वाणी पर संयम रखिएगा। अनापेक्षिक धन-व्यय से संभलकर चलिएगा।

मीनः किसी के विवाद में न पड़ने की गणेशजी सलाह देते हैं। मन एकाग्र करने का प्रयास कीजिएगा। आज खर्च पर संयम रखना होगा। मध्याह्न के बाद आपके स्वास्थ्य में सुधार होगा।

शब्द - सामर्थ्य

बाएं से दाएं

1. जल छिड़कना, राजा के सिंहासन रोहन का अनुष्ठान 4. मवाद, पीब (अं) 6. जाति 7. हाथ से धीरे-धीरे ठोंकना, थपकना 9. कमल रोग से ग्रसित व्यक्ति (उ.) 11. किरण 12. छौंक, तड़का 13. दुखदायी, दर्दनाक 15. विवाद, कहासुनी, तकरार 18. समूह, दल, समुदाय 19. दण्ड 20. काजल 22. अनाथ, निराश्रित, यतीम 24. दुख, शोक 25. एक प्रसिद्ध सफेद पक्षी, वक 26. राज्य का विदेश में प्रतिनिधि।

ऊपर से नीचे

1. विचित्र, अद्‌भूत 2. अंदर ही अंदर हानि पहुंचाना 3. वचन, वाणी 4. गुमराह, जो रास्ते से भटक गया हो 5. मुलायम सिंह की पार्टी का संक्षिप्त नाम 8. ब्रह्मापुत्र एक प्रसिद्ध देवर्षि 10. कार्यावली, करस्तानी, प्रशंसनीय कार्य 13. दासी, नौकरानी, बांदी, गुलाम स्त्री 14. प्रवृत्त करने वाला, प्रेरित करने वाला, आविष्कारक 16. श्रीकृष्ण के बड़े भाई, हलधर 17. सामान (उ.) 21. संसार, दुनिया 22. समय, चमेली की जाति का एक पौधा और फूल 23. पराजित, परास्त।

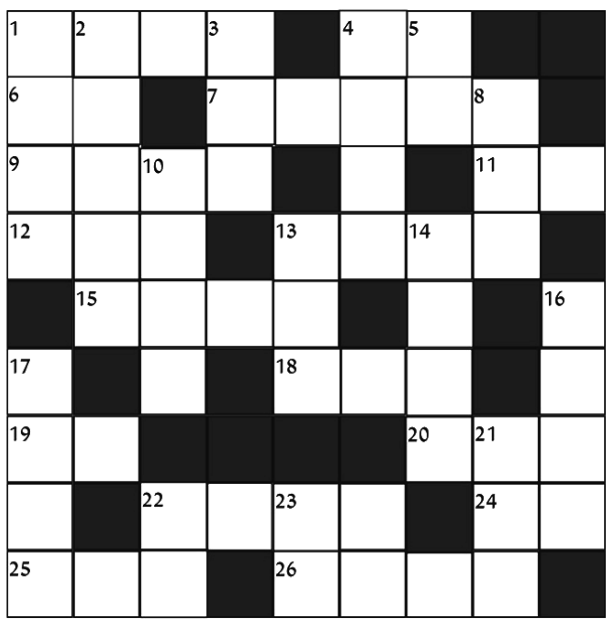

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 27 का हल

दि	क्क	त	■	आ	सा	न	■	आ
ल	■	मी	■	ख	■	सी	ख	ना
■	म	ज	बू	र	■	ह	■	जा
स	र्द	■	■	का	■	त	रा	ना
र	■	■	■	र	वि	■	ह	■
प	ह	ना	ना	■	ना	रा	ज	■
ट	■	■	क	शि	श	■	नी	ला
■	र	■	■	का	■	रा	■	य
खा	ति	र	दा	री	■	त	क्ष	क

सू-दोकू

	2		6		8		3	
9		8		3		4		
							5	
5		2			7		6	
	8		4			1		3
				9				
8			9				1	
	5			1		6		2
		1	7				4	

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.45 का हल

2	6	3	8	1	4	9	7	5
9	5	4	2	6	7	3	1	8
8	7	1	9	3	5		6	2
6	2	7	5	4	8	4	3	9
3	9	8	6	7	1	2	5	4
4	1	5	3	2	9	6	8	7
5	3	2	4	8	6	7	9	1
1	8	6	7	9	2	5	4	3
7	4	9	1	5	3	8	2	6